x निय वाणि द्ववरिसद्दो। का कण सा मंगलो॥१॥ उला २॥

मव दन ॥र्द॥श्रीवीतरागाय नमः॥ जो सव्वह विमाण अंतिव वितातिय नाण वित्तंतरो। तवनाम
रुदेवी कुक्खि रयणो। रव्याग कुलंमं म णो। नुत्तं नोव सिर जादेसि विउला। पलिपवङ्ग
पुणो संपत्तो गाथा॥ जिण अरहव्वा गवाणी। पणमउ सुह मति देहि जय जननी। वन्ने सुमय
ण रूवं। कितंर जितउ श्रीयरिसदेस॥२॥ मरु रिसह जिणवर पढम तिहुयरु जिणधम्म
हउद्धरण। जुगलधम्म सवे निवारण। नाभि रायह कुलतिलया। सवन्नि संसार तारण
जो सुरइं दिहि वंदियउ। सदा वरण तिसु धारि। कितंकिउं रति पति जितियउ तेगुण
कहउं विथारि॥३॥ सुणउ जन विया ए रएह परमथा। तजि विंता परकथा। पकथा निहे
इ कन्न दिजइ। मनु विकसइ कमल जिउं। जइ समाहि इक अमियपिजइ। परवइ जि
ह चिंतिपज रसु। घालइ कसमल घोइ। पुनरपि तिए संसार महि। जम्मण मरण न होइ
॥४॥ सुणः हिनोही जय जेरता। जेरत्तिय का मरस बहु उपाहिघंघइ। जिरत्तिया परनिंद
। परकथा जि के अवर उनमादि मत्तिया। पडे जि घोर समुद्द माहि। नजा आवइ सुत्तध्यानि। १
नवम सुइ जइ अमियसरि। पतेन सुणय कानि॥५॥ दोहडा॥ पुव्व करमि गहि वंधिया॥

सहइ सुदुख संताउ। इसु काया गढ भिंतरहि। वसइ सुचेयण राउ॥६॥ रम्ला॥ राउ चेतनि
काय गढमहि। निजनाण सार किहि। मनु मती सुपरबल वषाणे। परवृति निवित्ति जइ
। ता सुतीय परगह जाण उं। जाणिउ निवित्ति विवेक सुत। परवृति इंनड मोह। सो मिलिब
बइव उराड ज। करइ कपट नित दोह॥७॥ मफिहा॥ मोह घरहि माया पटराणि। आकर
इन संक अधिक सवलाणि। अकरि परपंचु ड गत फुसलावइ। तह निवित्ति किम आद
रपावइ॥८॥ दोहडा॥ चलिय निवृत्ति वि वेकलो। दीठे सयल अचार। मोह राउ तव
गडियउ। दलबसैन विथार॥ गाथा॥ ए गढ पुन्नपुरीय नामो। राजा तिहसत्तु करइ
थिर रजा। तह लेपुत्त पडुत्तीय। बहु आइ रुपाइय उ तेण॥१०॥ दोहडा॥ दिन्नी कन्या स
तित सुसु मति सरस सुविसाल। थापिउ रजु विवेक थिरु। घालि गलइ गुणमाल॥११॥
सालु विवेक हमाह मनि। सा वरपाउ निपसारि। पकदिवसि इमसोचि करि। दूय बुलावइ
चारि॥१२॥ मफिहा॥ मोह चारि तवतवइ वबुलाइया। सारलेण कज वेगि पगइया। काय

मदन

टकुसत्तपापुवखाणउं।अरतिदोदचउद्धउजाणउं॥१३॥षोडतरदससवापापुन्निरंगया
टणि।तबआपाकरिचरडेकावेसुपइठिया।धीरजकोटा।वालतबदिठिया॥१४॥दोहडा॥
धीरजिदेषिकुदरसणीया।बहुताडणितसुदीया।पइसणमिलइनगरमाहिं।लेकरितागेहा
या॥१५॥तिन्निगपतिकुवाटकुश।कपटिकिय उमनिधिहा।जितुसरवरितियजलुनरहि
।ततुसरिजायइवइहु॥१६॥रडा॥न्यानुस रवरध्यानु।तितुपालिजलुवाणाविमल
मया।सघणवृषतिवृततबारहा।थिरु: पंषीयडोगतिहानलिणिप्रगटप्रतिम
।इगारहा।अगतालीसउरिधिजिद।आ नंदकंजतरेहिं।पकजीहतेसुंदरायव
कुस्थतिजैनकरेहिं॥१७॥दोहडा॥बहुती यडैनप्रसंससना।करतीसुणियहिनारी॥
कपटवलियउतबनगरमांहिं।रूपजितीकउधारि॥१८॥मढिहिवि॥नगरीमांहिकपट
संवरियउ।गमरसादेषतफिरियउ।देषिविवेकसत्तासुवविहाण।दषीपरषदाबसुल २
हण॥१९॥देख्यान्याउनीतिमारगबहु।दष्यातिहगइलोकसुषासहु।नेदठेडुबहा

तिन्निपायउ।तबसुकपटुउरिपंथिहिधायउ॥२०॥आयअधम्मपुरीसोपजतउ।जाइहुह
।रमोहसउं।किनउ।मोहुबलाइबाततसुपुछइ।कहुविवेककवणगंइअछइ॥२१॥दोहडा
॥पासिबुलायउकपटतबु।पूछणलागउवात।कहांविवेकुनिवृतिकहा।कहुतिएहकाकुस
लत॥२२॥मोहसुणउतुम्हकानधरि।कप टपयासइएवाजइसी।दिहानयणिमइंतइ
सीवातकहेउ॥२३॥रडु॥वसइपहणपु न्नपुरपयडतहराजासतुथिरु।तिनविवे
कुगहिसुथिरथपिउ।परणाईधीयति॥ निरहुदेससवईसमप्पिउ।दयाधम्मतिह
पालियइ।कोजाइपरउपगार।तिहरहइ सुपनिनदासदा।वारअन्याईजार॥२४॥दोह
डा॥पउणिठतासइंसुषिवसइं।करइनः कोपरतातिं।काचेकंचनगलियमहिं।पडिइरह
इंदिनराति॥२५॥तेरइगढमहिंफोडिघर।चोरस्वरडलेहांहिं।परतिणकोइनबीपई।उसकीय
न्यामांहिं॥२६॥तहिंपरपंचनदासई।जहहइकिसीनकोइ।सबइसंतोषामेहना।दागमइ
अवलोइ॥२७॥[illegible]सुणियइसबमोषि।राउ

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

मद
न

नयरविषमउंदलुबलुअतिइंदनिरिंदकरदिजिसुबऊथुति॥२८॥सुणिरदोतंमोदनृपति
।मइदीगीनयरतणीपुहगति।स्वामीविवेकचडिउअतिवाडइ।उम्हउपरिगबइदीदाहइ॥
२९॥दोहडा॥जबपखारिउकपटतिणि।तबमनिमबरबद्ध।दालिवडिउजिउंवानरतो
चुतडिविविबूषद्ध॥३०॥तबअदंकारनकीरुति।तिनिजीयउवेगिबुलाइ।षबरिकरऊतिः
सुसेनकउं।सनाऊडइसबआइ॥३१॥ रदु॥रोसआयउनालितसृजगअरुसे
गसंतापतिदा।संकल्पविकल्पआइया। आवर्तचिंतासहिता।इषकिलेसऊधान
धाइया।कलदअंदेसा।उदमतदा।समरस बलगरजाइ।अइसीराजामोदकासना
जुडीसनआइ॥३२॥दोहडा॥करविसनात बमोदनडाइमविंतइमनमांहि।जबलगुः
जीवइविवेकऊइऊ।तवलगुदमसुषनांहि॥३३॥रद्दु॥तातमोदवयणसुणिपद्म।सुतमनम
यकवियउ।सिरुनवाइकरजोडिऊंपइ।दावानलुजिमपरजलइ।थरदंरायकरकोयकं
पइरदहिकिऊंजरबपुडेजितुवणिकेदरिगंधाआजिनिवृतिविवेकसिउगदिलेआ २

वउंबंधि॥३४॥दोहडा॥मोदरायतबद्दथिकरि।बीडउआपिउआपु।कुमतिऊसाषकुब
धिदा।देवालिउकेइगु॥३५॥गाथा॥गुडिमयणमतगजाइ।सजउदलविषिमचऊपयारे
ण।दरिबनईसनजिउ।जबवजिउगुद्दिरनीसाण॥३६॥गीतकाबंद॥वजियउनिसा
णवसंतुआयउ।ढालऊंदसषिद्वयं।सुगं धमलयापवणुफहिया।अंबिकोयलबहि
यं।रुणझणियकेवयकलियमऊयरा।सु रततरुपतिदिबाइयं।गावंतिगायवाजंति
वीण।तरुणिपाइकआइयं॥३७॥जि॥ एऊडिलो।केसकलावऊं।तलमंगमु
त्तियधारियं।जिएबीणनुयंगरुलंति चदनि।गुंथिऊसमसवारियं।जिएजु
वहघुणदरघरियसमुद्दा।नयणबाणच डाइयं।गावं॥३८॥जिएतिलकमृगम
यतिरकनछिया।वीरधजफरकंतिया॥जिएकनिऊंडलफंधमनमथमूढपछिव
।डंतिया॥जिएदंतिविजवमकिलगदि।कोकोकानददाइयं।गावंतिनीथवजं
तिवीण।तरुणिपायकआइयं॥३९॥जिएसिऊणगिरवररोमवनघननषसि

मद
नो

ख्यउसिवरकरणियंपाइतुमणिचलतद्दसमरतसकरा।कद्दउऊनरकितियद्दयं।
वडंतिघणरवखिद्दनूपुरकाछकुसमवणाइयं।गावंति॥५०॥जिएहरागकटिबधि
यापटंबरजिरहउरिकंचूका।सादाकंतिदस्तिऊकंतिऊरलति।मुछितनडलः
द्दरीवसो।जेविकटबधिदिद्दरइंएरविता। ।चारितत्तेउनपाइयं।गावंति॥५१॥
देषतद्दरसणजिस्हकेरा।रूपपद्दिली नासपा।जिएहसाथिपरस्सकरंतषि
णमद्दि।तेछतनद्दपणासपा।मेऊणक रंतदआउबीजइ।कद्दऊकिनिसु
षपाइयं।गावंतिगायण॥५२॥जेदबुदेष तचित्तरंजदिसीछुसतुदिवा
द्दी।जेचऊगतिमादिअनतजमलगु।बऊ तउषसद्दावद्दि।चितिअवरचितिदिअ
वरडंपद्दि।अवरुजगुपतियावद्दि।गावंति॥५३॥रद्दु॥तरुणिपायकडंतमतीसमि
थ्यातियगय डिय।विसनससततितिनितेउसजिय।सन्नाऊकुसीलतनि।पापऊस
तनीसाणुवजिय।छतुधरिउप्रमादसिरि।वंवरकषायदलेति।इमरतिपतिसंबूद्दकारि ४

गद
न

।खडियउगुद्दिरगडंति॥५४॥रंगिका।छदा।चडियउगुद्दिरगडंतिघोरि।मानइनसंक
अउरिसुतटआपणइजोछिउतुलबलो।ताणिऊसुमकोयंडलियतमरपणचकिय
।देषति तरुणितियकिकिनछलो॥साजियाणिपंचरूपाणि।संधियापंचइबाणफोरि
यजगतआण मंडविरणि।आयउआयउ रेमदनराइछुसद्दलागतधाइ।वलियस्स
रपलाइगद्दविति॥५५॥जिणिमलि उसंकरमाणखेडिउअंतरध्यनागउ
रीसंगहितप्राणइतेनडियं।जिनतपु कुविरंचिटालिघालेमायाजालिमोद्द
तिरूपनिद्दालिफंधिपडियं।दरिलिय उमदनकसिसोलद्दसद्दसवसारद्दि
उगूजरिरसिरयणदिणि।आयउ२मदनरा इ॥५६॥जमदगनिविस्वामित्रटालियउजि
एहचितु।तजितपुगिद्दकिउआपुषइयं।इंदुविषइअधिकव्यापु।अद्दिल्याटालियउआपु
गौतमिदियउसरापा।तगउइयं।जिनिलंकापतिफ्रिगाइआणियसीयचोराइ।घालियउ
रावणघायकदइजाणि।आइउ२मदण॥५७॥जिणिसन्यासीजितीसार।डंगमसिंजः

टाधार जोगिय मंभितबार घालियर सो॥ जिणि भगाव भरडवेसि॥ त्रदंडी लंचितकेसका
लीयपोसदरवेस किंकिनग सो॥ जखरषस गंधर्व गुरु सुभट सबलनर॥ पसुय पंषिय
धर कितिय थुणउ॥ आइउ रिमदन ण॥४८॥ किंकि डौन के सेवणहार ते तउ की ते भष्टा
वारा भोगिय सुष अपार संसार तणा॥ उय देषत भपअंध पडिय करम फंधि॥ किपऊ
गति बंधजन मघणा॥ जे सेबं भदतवक्र वर्ति॥ कामभोग करि थिति गयउ नरकग
तिसातमा सुणि॥ आइउ मदन॥४९॥ जिणि कंडरीक रिषि ता डिलियउ सु
भटपाडि॥ सिषरद्दाय उराडि तमुतजि यं॥ लायसबलसुसर अंगिर हिउ तिय:
दरंगि॥ विषम विषइ संगि सुष भजियं॥ वीरवलण सेवक नित्त इंदिय लोलुप चित्तमे
णकन रयपतु सुषन षिणी॥ आइउ मदन ण॥५०॥ इकि अबकु संजम रूपि पाठलिय मदन
भपि॥ दिनिय संसार कूपि दंसण भगा नित करहि सिपर पंछु अनेक जियहवंचू॥ तिजि
मणी लेदि कंव आपणु दवे उइ ते त उरदे षूवि ससहि आरं जि॥ सके न ब्रत वंजि॥ उदर ५

भरदिंडं भि॥ स्वविजणा॥ आइउ रमदण॥५१॥ षट्पद॥ जितउ सुभट बलवंड जिन्हादि
गाज सिंघ नवाइया॥ जितउ दयतपरवंडा॥ लोय जिणि कुमगि दिलाइया॥ जितउ देवब
लि भदधारि बहुरूप दिषालहि॥ जितउ कुठ तिजं च कर विलघु वण षंड जालहि॥ अस
पति गजपति नरपति भूयपति॥ अंतरभरियते अउलबलिया॥ टालिय अटल सिम
यणा नृपति पर पंचु करि॥५२॥ रडु॥ जितायसहिमनि किय उदर षु॥ पुन्निपुरहि
दिसि वलियउ॥ तव विवेकि आवंतिसुणियउ॥ चितंतरि चिंतव्यउ॥ कर विमंतु य
१ रिसउ मुणियउ॥ धम्मपुरी श्रीआदि जिणा॥ सुणियइ प्रगट उ नाम॥ तहु गयउ दहउं
उवरउं॥ मदन गवाउं गाउं॥५३॥ गाथा॥ इव करंति गुज्झमेतो आयउ सुद्धधान हूयरिस
हे सो॥ विवेक वेगि वलहजा॥ बुद्धा वइदेव सरवनि॥५४॥ दोहडा॥ वहिउ विवेकु आनंदु क
रि धम्मपुरी सुपहुत्त॥ परणाई संजमसिरी॥ सुषभोग वइ वहुत्त॥५५॥ जब विवेकना गउ
सुणिउ॥ चिंति आणंद अपाण॥ भागो कादण जाइया॥ पुर षद्पद प्रवाण॥५६॥ रडु॥ फिरिउ मन

मद मणु जिंति सब देसा नह नह जय २ करंदि । पेसाच गंधर्व गावंदि । बहु पिक्खियदुह मनि । ज
न जसु खंड ऊगड मांदिव डावइ । माया करइ वधमणउ । मो द्वरद सिउ चित सतेइ ढगं पुनि
यां जिणि घरि आयउ कुं ॥५१॥ दोहडा ॥ माय पिता पय लागि करि । तब मन मथ घरि
जाइ । रहि सिउ अंगि नमावइ । जिते राणे राय ॥५८॥ गाथा ॥ पडिजंति निति षिक्खिउ ॥ः
आयउ आनंदि घर द्विज वद्धारे । उह उदे । चंद वइण । आरत उवेगि उत्तारे ॥५९॥ ग
था ॥ मंदर द्वि मो भिमानणि । ब्रबइ तब मयण कवण कडेण । को सूर वार टलो ।
कहु सुंदरि मुझ सरि त्तु वणे ॥६०॥ रद्ध ॥ कंत जित्तउ कवण तइ देसु । को पहुण पुर
नयर कवण सबल नृपति मिगायउ । कि सुबत्तु विढंडियउ । कर विबंदि कहु कासु
ल्यायउ । कि सुमलियउ पर ताप तइ । कद्द २ फेरी आण । रति डंपइ द्वो मदन सुणि । कहु
पोरष अप्पाण ॥६१॥ मलिउ संकर इंद हरि बंभा वासग पयाल धर । चंद सूर गह गण त
रायण विद्याधर जख सुर सूर गंधव रगंधा वसहिं देव गय उण गायण । जोगा जग ६

म का पडी ॥ संना सार सबद । लेलेत पुण मह्वि दडो । तमइ घाले बंदि ॥६२॥ दोहडा ॥
सुणि करि पारष म झतणा । घाल्या मन नर माश स मुद्दा अणा न फूलि प्रा । गयउ विवे
ऊ पुलाश ॥६३॥ रद्ध ॥ जाणि मत पियजयउ विवेक । धम्म पुरि गढि चढिउ । सर वनिः
सन मान दीयउ । पर ताप द्वि गाजियउ ॥ खुरडे मउच्या त्रकायउ । जावंतउ वयरा गय
उ । दे षिक्क करि दहसो नझु । नां तु मद नमो दूनडा दुदूउं गमावइ खो झु ॥६४॥ दोह
डा ॥ ढढो लियत्ति नितं नवण । बलु लाघउ सुदडां द्वातइ सामुंद्द नदी सई । जे
मुझ पकडइ बांदा ॥६५॥ वडदा वइरी पिरथवी । घर मांदि गब्बइ कास । तां बलु पा
रष कंत उझ । जउ जित दिआ दास ॥६६॥ तब तिणि नारि वहु भेदियउ । तब तम
कि उतन सु जाजउ । जल पर जलवी अगगि मांदि । लेक रिढालिउ घाउ ॥६७॥ कवित्र ॥ः
रोम २ उह्लसिय स्तूज्रा टचा । डिय नि ह्वा डिया । गुरणाट उ जिउं सिंघा घालि वलगाय
अंगा डिया । विसद्दर जिम फुंकरि ता । लहि रि ले कोइ द्विव डियउ । जिउं पावसि म

म.व.ज. यमत्ता।तिमस्संगज्जविगडवडियउ।नक्कसद्दियतमक्कसतस्सुतरुणि।मच्छ उब्भडा॥
णुडजलिरवलिउ।श्रीधम्मपुरिपट्टणदिसिद्दि।तवस्सुट्ठमनमथवलिउ॥८॥गा
था॥वलियउरयःद्दना।द्दो।सुंदरिघरिवयणवित्तमझंमि।कलिकालितामस्सुणिय
उ।डग्गायउमोद्दत्तडजाइ॥९॥उ द्वियउमोद्दराउ।दिट्ठउनरस्सरवीरपरवं
डा।तूंकवणकच्छवासद्दि।कज्जुआ यउकवणकज्जेण॥१०॥रड्डु॥सणक्कस्स
।मोदृउंसुकलिकाल।दसेषतदिं संवरिउ।मइप्रतापआपणउकीयउ॥
विवेकदडाइयउ।मुकतिपंथचाल णनदीयउ।कोडाकोडीअट्ठदससागरम
इंबलकिउ।आदासरत्तयन्नगियउ। इवउम्हिसरणपक्कत्तरट्ठा॥११॥रड्डु॥दोहडा
॥आइपडिउतिउअवसरइंद्दि।प्रराषद्दसीळइकाम।कलिकालिपद्यारियउ।मोक्कु
तमकिउताम॥१२॥पथडीठंदा।तमकायउतिनित्तडुमाद्दजाया।पणिमायातइंउ
इंलीयवुलाइ।जबेवइगइदनिउंपकसथि।कलिकालकद्दइतबजोडीद्दुठा॥१३॥७

उम्हपुत्तमदनअतिचडिउतजि।मनमांद्दिनदेषइसोअंगज्जि।घरमांद्दिवडंतेतिणि
नारिदुट्ठि।आरतउनकियउतासुउट्ठि॥१४॥नक्कसद्दीतमकमनमथप्रचंडि।उत्त
रिउजाइतघोरकुंडि।सोघोरकुंडदुहरअगाज्ज।जलरुद्दिरपूइनरियउअथाक्कु
॥१५॥नयनामिनयंकरपालिजां द्दा।आसा तावयणनलणितोद्दा।तिद्दिवृष्यतिरक्क
करवालपत्ता।ऊडिपडिद्दिउद्दिबेदः द्दिसगत्त॥१६॥जद्दंकककंकपंषियां
नेद्दा।जिद्दचंचुसंडासीनषइदेद्दा। डिउलद्दरिअगनिजालातपांइषि
णमांद्दिसुतनुघालद्दिजलाइ॥१७॥ ॥करिमगरमछपछउठजीया।तिसुन
तरितपुणलेइदीया।द्दाइपरमाधामीव घकज्जाणि।तेघालिजालकाढंतिताणि।
॥१८॥इकलेइऊद्दाडा।कुकुद्दिइगद्दीर।तेषंडोषंडिकरिघालइंसरीर।तिद्दतपात
पद्दिनितलोद्दयंत।तिणद्दलावइअंगिजुषलइवंत॥१९॥पाइयइतावातोइसुद्दामंद
मंसजिकुंतेजीद्दलुधातेद्दधाटविषमज्जनीगद्दीर।तस्सुमांद्दिपचावइलेसरीर॥२०॥

मदन सिरतलइं करइं उप्परि सुपाउ । उवइं घालइं सबलनिसंक घाउ । तो लेकरि पीड दिघा
णी मोदि । रडवडइ धरि डइ वज्रदुख सदाइ ॥ ८१ ॥ उवइ रोएण नयण नाउ तापा । उवइ स
द दिजीय जि एह कीय पाप । जि एहि आन्या मानी मोहराय । तितो सरव रिम आदितइ जा
इ ॥ ८२ ॥ तद रस्तामी उतारा मयण कीय । मइं   आइ सारइय उमदीय । पुन्य पुर गढः
अति विषम थाण । तसु उप्परि व छिउक   रचिताण ॥ ८३ ॥ इब आइ रज्जु डीहइ
विषम संधि । उज्ज संकन मानइ जीतकं   धि । उज्ज अप्प आप्प अप्प उ नणइ । उ
ज्ज अवर काडि तिण वडि गिणेइ ॥ ८४ ॥ आ   दीसर सिउं मिलिय उ विवेक्क । अ एह
दउं बइसि किय मंतु एक । आपण उदाउ सज्ज   को गिणं ति कोडा णइ पासा किम ढलेति
॥ ८५ ॥ दोहडा ॥ पतीय वात सुण करि । चिंति उपन्न उ कोदा दल बल सेन संवाहि करि इ
मत्त डचडियउ मोह ॥ ८६ ॥ रड्डा ॥ मोह्व लिउ साथि । कलिकालु जाद्दूं तउ मदन नडा ॥ ८
तद्दं सुबइसि उज्ज मंतकीय उ । गाढ विषम उ धम्मपुरा । तदां सेन संवाहि लीय उ । गाढ विष

म उ धम्मपुरा । तदा सेन संवाहि लीय उ । तउ चालिय उ पइ जकरि । गाव धरि उमन मां
हि । पवण प्रबल जब उछलहि । तब घण घट कमरदहिं ॥ ८७ ॥ गाथा ॥ रहसि किव
इ घण घट्ट । जुडिया जद्द सबल गंजिगजयद्ट । सन्निबद्ध चलेस जदा । पयाण उकीय
उ नडमोहि ॥ ८८ ॥ रासाउंदा ॥ करविपया   ण उ मोह मदा नडचलिय उ । समुहउ जे
ष डवा उवट घूल उ रूज्जलिय उ । फुरहउ   जलद रुकें ता धा दति दित रुणि देश ॥
लेआई ति दिव्ह अग्गि धुखंती रिंडती ॥   या ॥ ८९ ॥ मुंडे सिर नर कट उद थिक
पाल जसु । समुद्द तोई य बोकि पया   ण उ करत तिसु । तिण उ सच मकपास
सु कदम गुडलवण । मोह चलत तसु न   यर ददी गेप सवण ॥ ९० ॥ प्रथम मझ लिंः
चालेति तसु फोदी फो करइ । नाइक वी रूज्ज मालउ मती अणुसरइ । वामइं काला
विसहर फण सुय सुंदणइ । सूकइ विरखि सिरि जोगिणि बोलइ दाहिणइ ॥ ९१ ॥ स
वण सुपन न रुज्ज मन्न इ चडिया गढि अति । कज्ज विणास ण आवसरि पुर रवद्द डिगइ ॥

मदन

मति। मउलि मउलिक स्विच्छिउ धम्मपुरी धुरदिं। आगमि ध्यात मिसार डाणाईबक्कु
वरदिं॥९२॥ दोहडा॥ आगमु ध्यात मु हुन्नि वारि। तिह्नं सुणाय उ आइ। उमह ऊपरि
पठाणियउ। स्वामी मनमथराय॥९३॥ मड्हा॥ सुणीय वात मनि रहसु उपायउ।
गरुव तणुनिकी बुवेगि बुलायउ। सारदे ईविवेकु बुलायउ। सनाहुडा सुहमंत
उपायउ॥९४॥ षटपद। समद मसंबर दूकदयराग सबलु नर। बोल्लित्त परम
हु सदण संतोष गरुव नर। षिमासो। जुसंमिय मिलि मदव मुत्ति तउ। संड
मसत सिउं चलिउ कंचण बेज्ञवउ। ब लुमंडि मिलवि करुणा। अटल सासण
विन्नइ वद्धाइयउ। लेफउडा सबल संबू॥ दकरि इमविवेकु तड आवियउ॥९५॥
गाथा॥ दकारिउ सुजटचारित्त। सज्यउ तपु सबल सैन संबूद। गदगाहिउ ऊेन चित्त॥
इवचल्लिउ रिसह जिणनाह॥९६॥ संकरा छंद। वह्नियउ रिसहस्वामी। विहसिमन
कवल्लु। तिउ पंथि सनमुष आइयउ। नथियउ मयमत्त धवल। मृदंग वीणा संषभेरी झू ९

ल्लरी झुणकार। दादिणइ सुंदरि सबद मंगल गीय करदिउचार॥९७॥ लेद्धा थिपूरण
कलस लषमी मिली सनमुष आइ। पावकु दीपक। जोति समसरि पेषियउ जिणराय
स्तवब सुरहो अति अनापम का। ढिता सुगोवालु। पइसंत पउल दिं दिहनरवइ करिगह
इकरवालु॥९८॥ नीलट उसुवावइ बोलि यउ वडिस फलवृषि दिवाइ। इकु निबल
जुगलु पलोइया। सावड चढिया आइ। ग रुडंत सुणियउ केहरी दधित्तरइं ला
डानगूडरी सनमुष पहुती आइ। गरडं तसुणियइ केसरी। सिरि धरिउ टउं
रउचाइ॥९९॥ दुइ दिह गयवर अतिस उजल करतिगलगुजार। आवंति फ
लनारंग निहालि। अवर कुसम वहार। सव ण सुपन संजोइया। तिमलव बधिपातइ
जामा जेनी तिमा रगि पुरष निश्चल तिह्नं सा। रुइ काम॥१००॥ रहु॥ कुपति मसवणए
जाम। गढ पाषलि नत्तरिउ। समति पंच सा बान भायउ। मन सूरद गाहिउ। डक सुनि
साण परग टवजायउ। दुक्कइ दोनि उं सबलदल। मिलि सुजट मुषडो डि रणदंष

मद
नकु
मार

इंडेनरषिसइ ति णि कीडणणी घोडि ॥१०१॥ पंथडी ॥ ढेद ॥ संग्राम वर्णना ॥ तिहि डण
णि दोसु डे तजि डाइ पखारि इन रपोरषकराइं रण अंगणि देष इं सूरवीरा पेरणा डे
मनच इदिंगदोरा ॥१०२॥ आइयउ पहिल अन्याघोरा उहिन्या निपगाडिउ करवि डोरा
मिथ्यात उरिउ तब अतिकराल ॥ डिनि रुलो पणनंतकाल ॥१०३॥ घलियउ कुमग्ग
हिलोय तासु ॥ तिणि मुसिउ न को को कोवि सासि अनादि काल डोनर दसहु
उद्दतिड इसुतट पकहमल ॥१०४॥ लोगालोगा तरदुद्दप्यारि ॥ जसु स
वितत्त मियइ गति विचारि ॥ समकितु सूर तबसु दिठु होइ बलु मं फिरण किर
जियउ सो इ ॥१०५॥ पाटियउ तिमरडिउं दषि जाणु ॥ नांगियउ बोडि सो पढम ठाण
॥ उगिरागु चलिउ गरजंत गाढा ॥ वयरागि हणाउ तिणि ताम्हु तारि ॥१०६॥ उरिघा
यउ दुसकुतव विषइ लग्गु ॥ पचषाण दषि बलु परहतगु ॥ उरि को हवलिउ झाल
कराल तव उपसमलेइ हणिउ तकूवाल ॥१०७॥ मदआठ सहितगजियउ माण ॥ १०

तिणि मद्दवि जित्तउ कोरवि ताण ॥ तव माया अति उहीकरारि ॥ मिलिअज्जवि दिन्न हिंसू
रि ॥१०८॥ लोई सपरसहउ गगजि ॥ दषि धीर हु सुभट सुगपनजि ॥ आइयउ कलह
तव कलकला इ ॥ दमिगयउ दसद जबषिमाधाइ ॥१०९॥ दुकियउ मउ मूष अंगेहु ॥
सतरायगमायउ तासु तेह ॥ जसील हुदृउं तउ दुढ वित्ति ॥ बलकर विविदारि उब्र
हूर्वात्ति ॥११०॥ दलुच वितउ मोहहमुह फिराइ उजलो जु सुमटु तबहु डिउ आइ ॥
तिनिदारुण बलमंडिउ बहुतु ॥ तिणि विकट बुधि सकुदेसघुत ॥१११॥ उदुषीक
रइ नित पुरष संत ॥ उद्दबायरहित सत्तडी उडंत ॥ षिणि हिलडदिषिण जडी
डाइ ॥ बलकर विब हुडि संवरइ आइ ॥११२॥ दसमइ गुणठाणलगिडेइ ॥ बलुक
रइ अधिकन हु जाणदेइ ॥ तिसु देषि पराक्रमु ॥ घलियराइ ॥ संतोषु तव सुउ ठिउ रिसाय
॥११३॥ तसु सासहणिउ लेवहूदंत ॥ षडहडिउ लोभु पडियउ प्रचंड ॥ हूदेपिहु ॥ सोक
जियकाल ॥ षिणि मां हिफिस्यउ नारद विताल ॥११४॥ तिनितिडाकू मति सुदृमति उपाइ ॥

मद
नो
विवेकसषाईकुअउआइ।जोबलणनदिंतउमुत्तिमग्ग।करिजोडिस्वामिसोवलणलग्ग॥१५
॥आस्त्रवउउरिउसतविधिसमथ।रणमझितिडिउकरिउब्रदन्न।संवरबलआणिउ।ताम
चिंति।तसुघायउमूलउपाडिथिति॥१६॥बहुलडियस्नुनटरणमांहिचारि।केताणेकेघं
घेसिमारि।दलमांहिजिकमहंत।प्रवंड।त पस्करिकिपतेषंडषंड॥१७॥जबबातसुणी
इदमोदराइ।तवजलितबलितउठीतरि साइ।करिरत्तनयणदुद्दंतपीसी।नितातु
पडिउझाणंत्तहिसीसि॥१८॥बहुरु द्दस्तपिजाइवडिउआयु।सोबहुतकरइ
जीयद्दसंताप।रणमंडिउसुरणमांहिद्दु सहुघाइ।तिस्नुसमजुनदुक्कइकोइआइ।
॥१९॥रहु॥कोनहुकइसमुद्दतसुआइ।ब। लुपौरषसबद्दरिउ।मलियअंमलसोअवलं
वालियवयरागद्धवारतेदतपहुअवरसंजमद्दालिया।अठाईसउपणायसतंजिसकहु
लग्गइधाइ।सोनरजम्मणमरणकरिबहुतीतोनिनमाइ॥१२०॥तबबुलायउदेविआदे
सि।विवेकसुसबलन्नहु।अपुबकरणथानकिबइठउ।अबगंजणमोदकउन्यानबुद्धि ११

मद
न
अवलोइदिह्उ।तेजिउतिनिसिषवाइकरि।आइसंवरस्तुत्तगाण।वगिवियारजघुतह
याजिजंचवलइनिरवाण॥१२१॥गाथा॥पयडावणपहुमुत्ती।चडियउविवेकसझिस्तुय
वालो।सरवन्निवरणलगो।बलउनमतवलियउपवा॥१२२॥वउपईछंद॥उनमतुलेवं
लिउमनमांहिपिछिलिउउपनीसद्दजसमा घारणअंगणिआयउ।साधद्दतायउनाम
जमतिकुबुधिरंजेसहिसजानडिउंपा वसघण।दुजणमझइताले।मोह्मंमउ
षंमणुन्यानद्दमंमणचडिउविवेकुजु वालो॥१२३॥उसबरुद्वाजेनरदास
इतेषरुकितइकम्मिनकजो।डिएकहु परसन्ना।पद्यलपुन्नातेराणेतेराजो।तेअ
विद्दइमतिद्दइनिम्मलचित्तद्दइ।विकसित वदनरसालो।मोद्दद्दमउषंडणन्यानद्दमं
मणुचडिउविवेकमुवालो॥१२४॥जोदलिबलिपूरउसत्तविधिस्नुरउपंचद्दमांहिपरिवा
णो।परमथद्दबूजइआगमसूजइ।धम्मध्यानिनितलीणो।जोफेडइदुरगति।आणइसु
द्दमति।बहुजीवद्दरफंतिपालो।मोद्दद्दमउषंमणु॥१२५॥कालन्नावसुविचारइ।जोस्नुं

मद्द
नक
मर

तहिं सा।उइं जेइ दिव्वि अउहिं। संकट विकट निवारइ। जो आगम वि भासइ। निरतउ नासइ
।मदन षणण उद्दालो। मोदहण॥१२६॥ षट्पद॥ पाप पडल निरदलण जो तिपरम प्रकास
णु। चिंतामणि इच्छ रयणु नवि यडाण मनु उवल्हसण। सकल कलाण हकोस समत्तइ त्र
ति दुख दपिहण। जिगत जीय दय अवरं न। नारधुरि धम्म दुरुहण। संतु हदोइ जि
सु नरमिलइ। तासु नपडइ कम्मफ जाव डियउ विवेकु इम सज्जि तु डकरण प्र
गट निर्वाण पडु॥१२७॥ पंथडी॥ छंद॥ प्र गटावणु मग्गु निवाण कजि। विवेक
सुभट तव चडिउ सज्जि। तव ठोवउ काय उतेण जाइ। मुष मो डिव लिउ तव मोह
राय॥१२८॥ देषियउ मदनि जब षिसंतमोद। त ॥ बव लिअष्पम निकर विरोह। उवइ द्रुनि
उंढु के कालकंधि। तइ जि डइ रणंगणि फउ जबंधि॥१२९॥ तइ अणीय जो डिज्जु टे नुवाल।
तदपडइ षग्गा जाण उं असणि जाल। तइ ते यव्वे समोले मिलंति। बइ सीय च्छे स्याउ ल दलं
ति॥१३०॥ तइ रद्दे सुभट अचच्छ होइ। दुद मोहि नपढव्हा षिसइ कोइ। जवदेषि उदलु हुं॥ १२

घर अगाजा। तवसंजमि रथि चडिव लिउ रिसाउ॥१३१॥ रंगिका छंद॥ जाणु संजमि रथ च्छिव
डा। तिनि गुत्ति गय गुडि मिलिय सुभट्ट। डिपं चवरतो। भिमा आडण समुद्दधरि न्यान कर
वाल करि। सम कित ताणि सिरि ठवियव तो। बूटे आगम सबल सर ऊमति कायर नर देषि
ह्रियइ थरथरकांपति घणो। नाजिनाउरे: मदन घट आदिनाद सिर सट देइ करि दद्द
वट प्रथम जिणो॥१३२॥ षतु रवि उनाव न नाइम तध जलद काइ मिलेराणिराइ च्छ
नीस गुणं। अनुप्रेष्या पाइक वारसील। सदसत्रे गिधार दस विधि धम्म चारस्स ब
लघणं। बइगवउ दस मइ गुण गणि देषि यउ त्रेतर ध्यान गति थिति सबजाणि कः
दइगुणी। नाउ नाउरे मदन घट०॥१३३॥ तिणि रतन जो सण कसि। वम्हव्रत धारि त्रि
सि। न फेरी वाजइ जासि गुहिर सरि। दया रद्दा पोर षवरि नागा हिंसा हु रिब लुच पसम सू
रि किय उनरे। अजअति सइतीस च्यारि प्र जय तिवं चिकारि। मंत्र सुक ध्यान धारि राषिउ
मणो। नाउ नाउरे मदन०॥१३४॥ घात्या सम रकट कफंद मोहराउ किया बंदि। कषाय

मद
न

च्यारइनिकंदिवदियत्तडा॥ मदमयगलकिया निपातत्तगिउदूरि मिथ्यातपडिउक्कसाल
बाउ॥ मुंडियघडो॥ धम्मसुरतित्ताटपढंतिडुंदहीदेववाडंति॥ सुरहतियगावंतिसासा
णगुणो॥ नाडुनाडुमदनण॥१२५॥ षट्पद॥ वडिउकोपिकंदपअप्पबलिअवरनमन्नइ
।कुंदइक्करखइहसइतसइस्सुनटहत्र वगन्नइ।ताणिकुसमकोवंडरेडनंडसंडं
।हदल।बंनियउसद्दिरिअंदत्तउनकु रषियतिहकलि।कविबद्धडोनडंगम
अटलसारकिअवरतिहकरइकोइ ।असिमाणहणिउअीआदिडिणगय
उमयणुदहवहहोइ॥१२६॥ रडु॥ दुसह बधउमोहपरखंडा।नडमयणनिकंदियउ
कलियकालतबपाडिलीयउ।आनंदुनिर वृत्तिमनि।विवेकडासतिलककहीयउ।डोव
टवाटेधम्मकेतेसहिघालेबांदि।वेइणराउबुडाइयउ।स्वामीरिसजिणंदि॥१२७॥बधम
दरिसम्माधिआगमिडणाइउ।रविकोटिअनंतगुणउगटडोतिकेवलदिपाइउ।सुर
पतिनरपतिनागपतिमिलीयसयनसकुआ।आनाफरणदेसमांहिदियउविवेकु १३

पगाइ॥१२८॥स्वामिपगाइउराउविवेकुसोदेहिंसंचरिउउसत्तसेणिकडंवेगिआय
उ।सोथप्पिउगणपतिसुतअछुतिसकडाडणायचापकुधमाडुकुविधिकहिउ।साग
रीअणगार।सोसंषेपइमकह्यु।नवियणस्मणकुविचार॥१२९॥मिलियस्वउविहसंघ
सकुआइ।बकुदेवीदेवतांतिरियडंचमिलि कुइइकहिया।करिबारहपरखदागमि
मंडविबइठिया।वाणीनिरमलअमायमइ ।स्मणिउपडाइसुहझाणं।नवियहत्त
उमनुगहगहिउस्वामीकरइवषाण॥ १४०॥थितिपयासियलोयअलोय॥
पुणितासिउअछडोनछिडंतितेनथिता सिउ।सुदअसु।हदिवफ्यफल।क
रवितेइपरगटपयासिउ।पुनिकारणछडंवि धिकह्या।डोडोतिसइकरइ।सोसोति
तिउंदहीमेलिदल।सासागतितोगइ॥१४१॥रोडाछंदु॥महारंतपारंतकरविपरिगहमेला
वहिं।पंचदावधूकरहिंमदमंसदिवितलावइ।इसहिसुखकउलणपापनकुगुन्य १।
विचारहिं।सोनरकहिंडाइ।मणुयडामंतरहारइ॥१४२॥बकुमाया।केजवइकपटः

मद न

करिपरमनु खेदइ॥ अतिकूडि दि अवगूढ कर विबलपर जियवंचइ॥ मुद्दि मिठा मति
मलिण एवं मोहि नलतक दावइ॥ इणि कमि हि नर जाणि॥ जोणितिर जीवं दपावइ॥१४ ३॥
नरपकति जो होइ ध्यानि आरति न विजइ इ॥ अनुकंपा वितधरइ विनइ सतत्ताय पंवह
इ॥ सद्दसरलपरण ममनिन आणइ मछर   मति॥ कहिउ पउं सर बन्नि सुनरपावइ
मानवगति॥१४४॥ रागसहित संजम जे   केवि मुनिवर इवं पालहि॥ सावइध
म्मि जिल्लाण दिहि जे समीनिद्दालइ॥ वि   णुर विजि दनिकरा॥ बालतप सीत
पुसाधहि इत्तु सत्ता इ जिण राय कहितं दे   वदगति बंधाहि॥१४५॥ रढु॥ सुणजु
सावइ वित्ति घरि रत्ता उ॥ निजा समकित सदद्द   उदेव इक्कु अरिहंत वेवज्जा॥ आरंभ पारंभ
विण सगुर जाणि निग्रंथ सेवज्जा॥ नासिउ धम्म जु केवली सो निश्चइ जाणिज्जा॥ तिम्ह व्रत
संजमु नेमु तिम्ह जिम्ह पहिला थिरु पज्जा॥१४६॥ षटपद॥ थूल पाण मम वहउ थूल कूडा १४
ममत्ता सज्जा॥ थूल अदत्त म लेज्जा॥ देषि पर तीय वितता सज्जा॥ परग्गह दिग्गहप्रमाण त्तो गत ११

पत्तोग संषेवउ॥ अनथ दंड वेरमण नव मउ सामाइक सेवज्जा॥ पसरंतु सुमन दस मइ दं
मउ॥ पोसज्जा पकावइ सधरज्जा॥ आहार सुधवित्ति निम्मलइ संविभाग साधह करज्जा॥१४७॥
मफिली॥ पहिला प्रतिमा दंसण धारज्जा॥ बीजी प्रति निम्मल उउ बारउ जा॥ तीजी ति जु का
लेसामाइक॥ चउथी पोसह सिव सुष दाइक॥१४८॥ पंचमी सयल सचित्त विवज्जइ॥ नाय
ण रायण बद्दा कि जइ॥ सतमी ब्रह्मव्रत द   दुपालज्जा॥ अठमी आपण आरंभ टालज्जा॥१४९॥
नवमी परिग्रह परइ मेल्हा जइ॥ सावदि   वचन न दसमी दिजइ॥ एकादसमी पडि
माइह परि॥ रिषि जिम लेजि षा पर घर   फिरि॥१५०॥ दोहडा॥ इम जे पालहि श्राव
क तो इक्कउ तिम जिण धम्म॥ जग मांहि   हूअ उ तिणि तण उ नरस्स का छेउ जम्म॥
१५१॥ रढु॥ कुंपिस कउ जकरज्ज तं तिसउ   बूलमंड जु देहसुं॥ अह वि किंपि जे नर तं स
कउ हुता॥ तां सइह जाध्यान निज्जा॥ दियइ धरतिपिणि इक्कु नयक्क जा॥ अंति दिकरज्जु संलेष
णा॥ सहै जीव षिमाइ॥ पालज्जु सावइ सुष लज्जा॥ उ आणंजिणे सरराइ॥१५२॥ सुणउ साजु
विध म्मुदित करण॥ सोपालज्जु अषत मणि॥ सुगइ होइ दुग्गइ निवारइ॥ बहुंत संसार मांहि॥

मदन कम र

होइतरउखिणमंदितारइ।बंधेकम्मडिम्हुदअसुह।मीयअणंतइकालितेतपबलिसदिनिद्द
लियडिमतरुकंदकंदाल॥५३॥घटपद॥गेडिइकआरंभरागदोषदविजतज्जातिविसल
परहरउ।च्यारिकषायविवज्जउ।पंचप्रमादनिवारिगेडिपाडणछकाइदा।वंविसन्नत्तयउ
ण।अहमदमयपडिसिन्नायांदा।अबंभननन वविधिअविरइ।मिथ्यादसविधिपरदरो।
रिषिसुणनिछजपमसरवमकढिउ।इम अपणपउउधरज॥५४॥इकवसिकरि
आतमउविन्निधावरतसपालज।आ रादोजतयरश्यणसरणवजंतणउनि
दालज।पंचइचारदवरजदख्ठदविहि नलिजइ।सुत्तसतनइजाणमातअडं
समयगहिज्जउनवबंभवाडिदिढरपिय इदसलक्षणधम्मदरमज्ज।जिणनासइ
मुनिवरसुणज्ज।गतिनच्यारिपुनरपित्तमुज्ज॥५५॥सुमतिपंचतियगुपतिपंचमहवइ
चारितपरिसंजमुसतरहभेयभेयबारहतपुआचरि।पडिमादुइदसवदज्जासदज +त
बावीसपरीसहा।तावनत्ताइपचीसा।पापसुतंजिणववासहा।तेतीसआसायण।टा १५
लियइ।जिणवउवासदथुतिकरज्ज।गईसपगयनडमोहनिणि।इबसुसाधुसि

मदन

वपुरिसरज्ज॥५६॥रदु॥दिनदेसणपहजिणराइ।गदगणदरसंघजदात्तव्यजीवसं
वेगआयउ।कीयथितिवउवीदहा।तिथंकरुतवनामपायउ।नामगोतपुणवेणीय।आ
उसेसजिकुंति।तेषयकरिसिवपुरगयउ।सुषभोगवइअनंत॥५७॥घटपद।जिहं
नजरानमरणजहिपुणव्याहिवेयण। जहांनदेहननने ह।जोतिपुणतहठवे
यण।जिहठइसुरवअनंतन्यानदंसण अवलोवहि।कालविणसइसयलसि
द्वपुणिकालहिथोवइहि।जिसुवन्न नगंधनरसफरस।सबदजेदनकि
हालहिउ।बुधराजकहइश्रीरिसह जिणसुथिरहोइतइठइरहिउ॥५८
॥रदु॥रायविक्रमततणउसंवत।निन्या सायइपनरसइ।सिरदरुत्तिआसुयव
माणउ।तिथिपडिवासुकलपष।सनिश्चरवारि।करणनषितजाणउ।तिदुदिनव
हिपसंपडिउ।मदनजुझसविसेस।कारतपढंतासुणतनर।जयउसामिरिस
हेस॥५९॥इतिमदनजुझ॥समाप्त॥छ॥छ॥संवत१६४२वर्षेकतीसदि१५दि १६

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

मदन
रु·सं
१८

स्तो॥त्रेंमन्त्रतेंधवीणा॥ईदुस्तक-नैसारकस्यो

Dr BHAU DAJI MEMORIAL